International Journal Of Advanced Research In Engineering Technology & Sciences
ISSN: 2394-2819
February- 2015 Volume 2, Issue-2
Email: editor@ijarets.org www.ijarets.org

मुरादाबाद जनपद (सम्भल सहित) में ग्रामीण विकास एवं शस्य वैविध्य–प्रतिरूप के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का प्रादेषिक मूल्यांकनः एक भौगोलिक विशलेषण

डॉ0 मोहन लाल 'आर्य'
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय
दिल्ली रोड, मुरादाबाद

प्रस्तावनाः–

ग्रामीण विकास का उद्देश्य ग्रामीण जनसंख्या के भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण में निरन्तर सम्बर्धन करना है। ग्रामीण विकास की प्रकृति जटिल है फिर भी ग्राम्य विकास को निरन्तर करने के लिए, ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन, कृषि विकास, ग्रामीण औधोगीकरण, कृषि तकनीकी (प्राविधिकी), कृषि रूपान्तरण, ग्रामीण–नगरीय सम्बन्ध, परिवार कल्याण व जनसंख्या नीति आदि के विकास एवं परिवर्तन की आवश्यकता है। ''विवषता प्रेरित प्रब्रजन महानगरीय क्रोड़ो के लिए श्रमिक आपूर्ति का साधन तो है किन्तु पर्यावरण प्रदूषण, मलिन बस्ती प्रसार आदि अनेक प्रकार की समस्याओं का भी जनक है। दूसरी ओर उपान्त क्षेत्रों में दरिद्रता–दुष्चक्र की जकड़ बढ़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में अब शुद्ध उत्पादन वृद्धि को विकास का मापदण्ड मानने वाले एवं तदर्थ भारी उद्योगों के संश्लिष्ट निर्माण पर बल देने वाले नियोजक भी ग्रामीण विकास की समीचीनता एवं अनिवार्यता स्वीकार करने को बाध्य है।'' विकास एक सापेक्षिक संकल्पना है जो देष काल एवं वातावरण के अनुसार परिवर्तित होती है। वस्तुतः इसका अभिप्राय प्रगति, उत्थान एवं वांछित परिवर्तन से होता है। विगत वर्षो में विकास से तात्पर्य आर्थिक क्षेत्र में हुई प्रगति व सुधार से समझा जाता था, किन्तु आजकल इसका अर्थ जीवन के विविध क्षेत्रों में हुए वांछित गुणात्मक एवं परिणात्मक परिवर्तनों से लिया जाता है। यह एक स्वंय सिद्ध सत्य है कि बिना विकास के केवल समृद्धि मात्र से समाज को प्रगति पथ पर नहीं लाया जा सकता है, और इसी तरह हम संवृद्धि के बिना विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते है। षिक्षा, प्रषिक्षण, राजनीतिक जागरूकता, पूँजी निर्माण के साधनों आदि को विकास के अन्तर्गत समाहित किया जाता है। वास्तव में विकास कार्य एवं कार्यो की एक श्रृंखला अथवा प्रक्रम है जो कि जीवन की दषाओं में शीघ्र ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, वातावरणीय सुधार करता है अथवा भविष्य में, जीवन की सम्भावना में वृद्धि करता है या दोनों ही कार्य इसके द्वारा किये जाते हैं।

हरित क्रान्ति की तकनीकी ने जहॉ एक ओर कुछ फसलों की उत्पादकता को काफी बढ़ा दिया, वही कुछ फसलें हरित क्रान्ति के कारण उन्नति नहीं कर सकी, क्योंकि हरित क्रान्ति की अपनी सीमायें है जहॉ गेहूँ, ज्वार, मक्का, चावल, बाजरा में अभूतपूर्व उत्पादन हुआ वही दलहन व तिलहन के क्षेत्र में इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसके साथ ही हरित क्रान्ति से सम्पन्न और आर्थिक सम्पन्न हो गये तथा गरीब उन्नतिषील तकनीकी अपनाने में आर्थिक विपन्नता के कारण असमर्थ रहे। फिर भी हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर हो गया।

छोटें किसानों की सहायता के लिए रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया, नाबार्ड और आई0डब्ल्यू0आई0 के सहयोग से विषेष संस्था स्थापित होगी जो 12 परियोजनायें लागू करेगी।
कृषि क्षेत्र विकास में बेहतर प्रबन्ध के लिए कृषि क्षेत्र की षिथिलता को दूर करने तथा उत्पादकता में वृद्धि के लिए 25,000 करोड़ रूपये के विषेष पैकेज की घोषणा वर्तमान प्रधानमन्त्री डॉ0 मनमोहन सिंह जी ने एन0डी0सी0 की बैठक में 29 मई 2007 को नई दिल्ली में की थी।

IJARETS

जनवरी 2006 में सरकार ने ऋण संरचना के पुनर्जीवन हेतु पैकेज की घोषणा की जिसमें 13596 करोड़ रूपये की वित्तीय सहायता शामिल है तथा इस योजना के अन्तर्गत नवम्बर 2009 तक 7051.75 करोड़ रूपये की वित्तीय सहायता शामिल है।कृषि ऋण माफी और ऋण राहत योजना का प्रारम्भ केन्दीय बजट 2008–09 में सरकार ने किसनों हेतु किया था। अनुसूचित वाणिज्यक बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सहकारी ऋण संस्थानों ने 31 मार्च 2007 तक प्रत्यक्ष कृषि ऋणों का संवितरण किया। 31 मार्च 2007 को अतिदेय, जिसमें 29 फरवरी 2008 तक नहीं चुकाए वे ऋण माफी या ऋण राहत जैसा जो भी मामला हो के पात्र हैं। 65,318.33 करोड़ रूपये की ऋण माफी और ऋण राहत सहित इस योजना से लगभग 3.68 करोड़ किसान लाभान्वित हुए हैं।

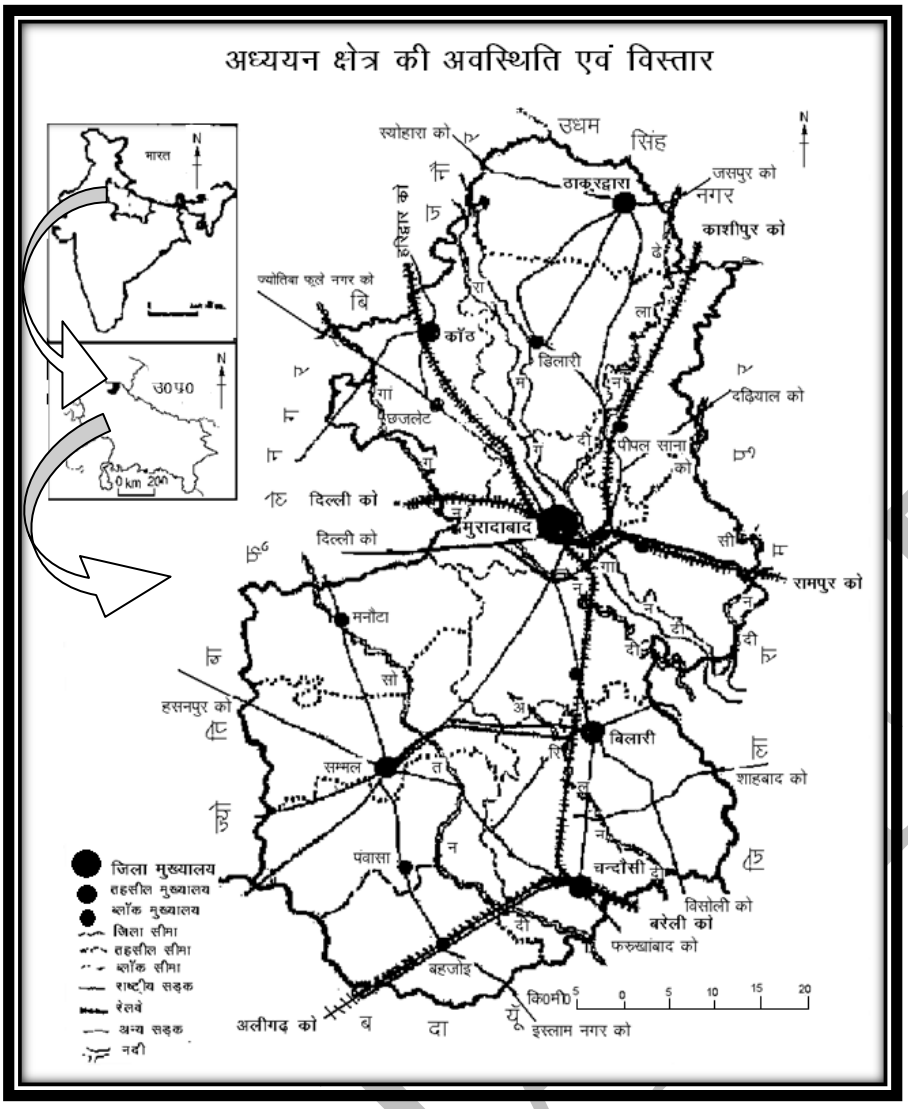

उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य अनेक योजनाऐं कृषि एवं किसनों के विकास हेतु प्रारम्भ की गयीं जैसे– मनरेगा, कृषि उत्पाद विपणन समिति अधिनियम (एपीएमसी), रूरल नॉलेज सेंटर, किसान काल सेंटर, सभी कृषिगत उपजों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करना, मार्केट रिसक स्टेबलाइजेषन फण्ड का गठन आदि।

अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति एवं विस्तारः–

अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद (वर्ष 2010) जो कि ऊपरी गंगा के अन्तर्गत पष्चिमी रूहेलखण्ड मैदान (मुरादाबाद मैदान) में 28^0 10′ उत्तरी अक्षांष से 29^0 16′ उत्तरी अक्षांष तथा 78^0 24′ 21′′ पूर्वी देषान्तर से 79^0 6′ पूर्वी देषान्तर के मध्य विस्तृत है। अध्ययन क्षेत्र का उत्तर से दक्षिण विस्तार 97 किमी0 एवं पूर्व से पष्चिम विस्तार 56.5 किमी0 है। अध्ययन क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 3817.00 वर्ग किलोमीटर है। जिसका 96.67 प्रतिषत भाग ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। अध्ययन क्षेत्र में कुल आबाद ग्रामों की संख्या 1559 है जबकि जनपद में 13 नगरीय क्षेत्र पाये जाते है। मुरादाबाद जनपद की उत्तरी सीमा ऊधम सिंह नगर (उत्तरांचल) और बिजनौर, दक्षिणी सीमा बदायूँ, पूर्वी सीमा रामपुर तथा पष्चिमी सीमा जे0पी0नगर (ज्योतिबा फूले नगर) जनपदों द्वारा निर्धारित होती है। मुरादाबाद जनपद का मुख्यालय मुरादाबाद नगर में स्थित है। अतः मुरादाबाद महानगर जनपद का सबसे बड़ा एवं प्रमुख नगर है जो रेल और सड़क मार्ग द्वारा देष के विभिन्न भागों से सुसम्बद्ध है।

प्रषासनिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र को 6 तहसीलों:– ठाकुरद्वारा, कांठ, सम्भल, मुरदाबाद, बिलारी एवं चन्दोसी तथा 13 विकासखण्डों:– ठाकुरद्वारा, डिलारी, छजलेट, असमोली, सम्भल, पंवासा, भगतपुरटांडा, मुरादाबाद, मुंडापाण्डे, डींगरपुर, बनियाखेड़ा, बिलारी तथा बहजोई में विभक्त किया गया है जिसे मानचित्र संख्या 1 के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

अध्ययन विषय के निर्धारण का उद्देष्य एवं महत्व:–

कृषिगत विविधता विभिन्न भौतिक आर्थिक एवं सामाजिक तत्वों के पारस्परिक क्रियाकलापों पर आधारित होती है, इसलिए समय विषेष में या किसी स्थान पर प्रभावी तत्वों की उपस्थिति–प्रतिरूप, कृषि संसाधन उपयोग की वर्तमान क्षमता एवं उसमें होने वाले परिवर्तनों का संकेत मिलता है। शस्यगत गहनता एवं विविधता कृषि संसाधन उपयोग के विभिन्न प्रतिरूपों के तुलनात्मक विष्लेषण के आधार पर उपलब्ध आर्थिक लाभ पर आधारित रहती है इसलिए किसी क्षेत्र विषेष की कृषिगत विविधता का भौगोलिक विष्लेषण करने से विकास स्तर का ज्ञान होने के साथ ही भावी कृषि नियोजन हेतु समुचित आधार उपलब्ध हो जाता है। ग्रामीण विकास में कृषिगत विविधता एवं उत्पादकता में वृद्धि का सर्वोपरि महत्व है।

शस्य–वैविधता एवं ग्रामीण विकास के बीच पाये जाने वाले सहसम्बन्ध के महत्व को ध्यान में रखते हुऐ प्रस्तुत अध्ययन में मुरादाबाद जनपद में उपरोक्त तथ्य का क्षेत्रीय आधार पर भौगोलिक विष्लेषण करना अध्ययनकर्त्ता का प्रमुख उद्देष्य है।

अध्ययन में प्रयुक्त विधितन्त्र:–

अध्ययनकर्त्ता ने अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास एवं शस्य वैविध्य–प्रतिरूप के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का मूल्यांकन के लिए सर्वप्रथम ग्रामीण विकास का निर्धारण या मूल्यांकन करने हेतु प्रयुक्त प्रखण्डों (आर्थिक प्रखण्ड के विकास स्तर का मूल्यांकन, वित्तीय एवं व्यापारिक प्रखण्ड के विकास स्तर का मूल्यांकन, परिवहन एवं संचार सम्बन्धी प्रखण्ड के विकास स्तर का मूल्यांकन एवं जनसंख्या प्रखण्ड के विकास स्तर का मूल्यांकन) का कोटिक्रम निर्धारित किया, तत्पष्चात शस्य वैविध्य–प्रतिरूप का कोटिक्रम निर्धारित किया। तत्पष्चात दोनों (ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम एवं शस्य वैविध्य–प्रतिरूप का कोटिक्रम) कोटिक्रमों का अन्तर ज्ञात किया, तत्पष्चात स्पीयमैन की अनुस्थिति अन्तर विधि (Spearman's Rank Difference Method) का प्रयोग करके सह–सम्बन्ध गुणांक ज्ञात कर, दोनों के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का निर्धारण किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त संकल्पनायें/परिकल्पनायें:–

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित संकल्पनाओं/ परिकल्पनाओं पर आधारित है:–

1. ग्रामीण विकास की धुरी कृषिगत विकास है।
2. विकास के कारक स्थान–काल परिप्रेक्ष्य में विलग नहीं, प्रत्युन्त एक समिश्र रूप में ही कृषिगत एवं संम्पूर्ण ग्रामीण विकास के प्रेरक हो सकते है।
3. ग्रामीण विकास कार्यक्रम निर्धारण करते समय पर्यावरण अतिक्रमरण पर अंकुष लगाना आवष्यक है।
4. विकास हेतु सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में कृषिगत विविधता व गहनता के साथ कृषि आधारित उद्योगों का विकास आवष्यक है जो व्यापारिक कृषि को प्रोत्साहन देकर ग्रामीण अर्थतन्त्र की नीव सुदृढ़ करते है।

आंकड़ों का संचयन:–

प्रस्तुत अध्ययन के लिए बनाई गयी परिकल्पनाओं के औचित्य की परख हेतु विभिन्न स्रोतों से आंकड़ों को एकत्र करने का प्रयास किया गया है। आंकड़ों का संचयन द्वितीयक स्रोतों के अतिरिक्त आवष्यकतानुसार प्राथमिक स्रोतों से भी किया है। द्वितीयक आंकड़ें मुरादाबाद जनपद के विभिन्न कार्यालयों, संस्थाओं, संगठनों से प्रकाषित एवं अप्रकाषित रूप से प्राप्त किये है, परन्तु संख्याधिकरी कार्यालय से प्रकाषित 'अर्थ एवं सांख्यिकीय पत्रिका', योजना आयोग नई दिल्ली द्वारा प्रकाषित मासिक पत्रिका 'योजना', 'कुरूक्षेत्र', भारत 2004, 05 व 06, वार्षिकी सर्वाधिक सहायक व उपादेय सिद्ध हुई है। जिला जनगणना पुस्तिका–2001, जनगणना उपनिदेषक कार्यालय, जिला गजेटियर, रेल व सड़क परिवहन कार्यालय, जिला सूचना अधिकारी, जिला राज पंचायत अधिकारी कार्यालय आदिसे प्राप्त आंकड़ें एवं सूचनाओं का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन, समग्र का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिदर्ष ग्रामों से प्रष्नावली विधि द्वारा किया गया है।

परिणाम एवं विष्लेषण:–

किसी भी क्षेत्र विषेष के विकास को जानने के लिए उस क्षेत्र विषेष के ग्रामीण विकास एंव शस्य वैविध्य–प्रतिरूप के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का मूल्यांकन करना जरूरी हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद में ग्रामीण विकास के स्तर को स्पष्ट करने हेतु अध्ययन क्षेत्र के गामीण विकास एवं शस्य वैविध्य–प्रतरूप के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का प्रादेषिक मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद में ग्रामीण विकास के मूल्यांकन हेतु निर्धारित प्रखण्डों में आर्थिक प्रखण्ड के विकास स्तर का मूल्यांकन प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है। इस मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न विकासखण्डों को विकास स्तर के सूचकांक के आधार पर कोटिक्रम प्रदान किये

गये है। तदानुरूप प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न विकासखण्डों के शस्य वैविध्य सूचकांक के आधार पर कोटिक्रम तथा शस्य वैविध्य सूचकांक सम्बन्धी कोटिक्रम के अन्तर निर्धारित किये गये है। तत्पष्चात विभिन्न प्रखण्डों के विकास स्तर सम्बन्धी कोटिक्रम तथा शस्य वैविध्य सूचकांक सम्बन्धी कोटिक्रम के अन्तर निर्धारित किये गये है। यह अन्तर धनात्मक से लेकर ऋणात्मक तक है। इन्हीं धनात्मक एवं ऋणात्मक अन्तरों के आधार पर क्षेत्र के विभिन्न प्रखण्डों तथा शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का क्षेत्रीय विष्लेषण किया गया है। उपर्युक्त वर्णित अनुरूप अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद में विभिन्न प्रखण्ड के विकास सम्बन्धी कोटिक्रम तथा शस्य वैविध्य सम्बन्धी कोटिक्रम एवं इन कोटिक्रम के मध्य अन्तर का विष्लेषण के माध्यम से अन्तर्सम्बन्ध का मूल्यांकन किया गया है।

सम्पूर्ण प्रखण्डों के संयुक्त विकास स्तरों का मूल्यांकन एवं शस्य वैविध्य–प्रतिरूप के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का प्रादेषिक मूल्यांकनः– अध्ययन क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रखण्डों के संयुक्त विकास स्तरों सम्बन्धी कोटिक्रम तथा शस्य वैविध्य सम्बन्धी कोटिक्रम के मध्य अन्तर को विकासखण्डवार तालिका संख्या 1 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

तालिका संख्या – 1

सम्पूर्ण प्रखण्डों के संयुक्त विकास स्तरों एवं शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का प्रादेषिक मूल्यांकन

विकासखण्ड का नाम	आर्थिक प्रखण्ड के विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य– प्रतिरूप का कोटिक्रम अन्तर	वित्तीय एवं व्यापारिक प्रखण्ड के विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य– प्रतिरूप का कोटिक्रम अन्तर	परिवहन एवं संचार सम्बन्धी प्रखण्ड के विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य– प्रतिरूप का कोटिक्रम अन्तर	जनसंख्या प्रखण्ड के विकास स्तर का एवं शस्य वैविध्य– प्रतिरूप कोटिक्रम अन्तर
ठाकुरद्वारा	–1	–10	–11	–8.5
डिलारी	–3	–5	–7	–5
छजलेट	–7	–5	+3	+2
असमौली	+7	–1	+9.5	+5
सम्भल	0	+3	+4.5	+8
पंवासा	+5	+3.5	+1.5	–6.5
भगतपुर टांडा	+1	+4	–3	–4.5
मुरादाबाद	0	0	+3	+4
मुंडापाण्डे	–3	–5	–6	–1
डींगरपुर	–2	+7.5	+4	+7
वनियाखेड़ा	–2	+1	0	+2
बिलारी	+2	+1	+8.5	+0.5
बहजोई	+3	+4	–7	–3

तालिका संख्या 1 का विष्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास के स्तर को निर्धारित करने वाले विभिन्न प्रखण्डों के विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य–प्रतिरूप के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का कोटिक्रम अन्तर में पर्याप्त विषमता है। जहॉ मुरादाबाद विकासखण्ड में दो प्रखण्डों (आर्थिक और वित्तीय एवं व्यापारिक) में ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य–प्रतिरूप उच्च पाया गया है। अर्थात इस विकासखण्ड में इन प्रखण्डों के विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य–प्रतिरूप के मध्य पूर्ण अन्तर्सम्बन्ध पाया गया है। वही परिवहन एवं संचार सम्बन्धी और जनसंख्या प्रखण्ड के विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य में उच्च अन्तर्सम्बन्ध पाया गया है। इन प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास का स्तर तो बढ़ा है लेकिन शस्य वैविध्य अधिक/उच्च पाया गया है। अर्थात ग्रामीण विकास स्तर का शस्य वैविध्य पर कम प्रभाव पड़ा है, और शस्य वैविध्य अधिक पाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र के ठाकुरद्वारा विकासखण्ड में सभी प्रखण्डों के अन्तर्गत शस्य वैविध्य अधिक पाया गया है। इस विकासखण्ड में ग्रामीण विकास का स्तर तो बढ़ा है, लेकिन शस्य वैविध्य भी ग्रामीण विकास की अपेक्षा अधिक बढ़ा है। इस विकासखण्ड में ग्रामीण विकास उच्च होने के साथ–साथ कृषकों द्वारा अधिक मुद्रादायिनी फसलों के साथ–साथ अन्य फसलों का भी उत्पादन पर्याप्त रूप से किया जाता है। कृषकों द्वारा ग्रामीण विकास के साथ–साथ अधिक आय प्राप्त करने हेतु शस्य वैविध्य को भी विकसित किये रखा है। यह विकासखण्ड तीन फसली क्षेत्र होने के कारण, विकासखण्ड के कुल फसली क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिषत क्षेत्र तीन फसलों (गेंहूँ, चावल एवं गन्ना) के उत्पादन में सम्मिलित किया जाता है। साथ ही साथ इन तीन मुख्य फसलों के अतिरिक्त अन्य गौण फसलों का उत्पादन भी इस विकासखण्ड में किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र के डिलारी विकासखण्ड में सभी प्रखण्डों के अन्तर्गत शस्य वैविध्य अधिक पाया गया है। इस विकासखण्ड में ग्रामीण विकास के साथ–साथ शस्य विविधता भी बनी रही है। डिलारी विकासखण्ड क्षेत्र में कृषकों द्वारा विकास सुविधाओं का अनुप्रयोग करने के साथ

IJARETS

शस्य विविधता को भी बढ़ाया है। डिलारी विकासखण्ड दो फसली (गेंहूँ एवं चावल) प्रधान क्षेत्र होने के कारण इस क्षेत्र में गेंहूँ एवं चावल के उत्पादन के साथ–साथ अन्य मुद्रादायिनी फसलों का उत्पादन किया जाता है। जिस कारण ग्रामीण विकास का स्तर उच्च बना रहने के साथ–साथ शस्य विविधता भी उच्च बनी हुई है।

छजलेट एवं असमौली विकासखण्डो में आर्थिक तथा वित्तीय एवं व्यापारिक प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास के बावजूद शस्य वैविध्य अधिक पाया गया है। आर्थिक तथा वित्तीय एवं व्यापारिक प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास तो हुआ लेकिन शस्य वैविध्य अधिक पाया गया है। वही परिवहन एवं संचार सम्बन्धी तथा जनसंख्या प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास के उच्च स्तर के कारण शस्य वैविध्य में कमी आयी है। अर्थात उक्त दोनों प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास के स्तर से कृषक काफी प्रभावित हुए है और उन्होनें मुद्रादायिनी फसलों के उत्पादन पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया है जिस कारण से इस प्रखण्ड के विकास स्तर के कारण इस क्षेत्र में शस्य विविधता में गिरावट आयी है। अतः ग्रामीण विकास का स्तर उच्च रहा है और शस्य वैविध्य कम पाया गया है।

सम्भल विकासखण्ड में समस्त प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास एवं शस्य वैविध्य में पर्याप्त विषमता पायी गयी है। जहॉ आर्थिक प्रखण्ड के अन्तर्गत ग्रामीण विकास हुआ है, वही शस्य वैविध्य भी उच्च पाया गया है। अर्थात इस प्रखण्ड के अन्तर्गत ग्रामीण विकास और शस्य वैविध्य में पूर्णतः अन्तर्सम्बन्ध पाया गया है। वहीं दूसरी ओर वित्तीय एंव व्यापारिक, परिवहन एवं संचार सम्बन्धी तथा जनसंख्या प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास का उच्च स्तर पाया गया है। अर्थात इन प्रखण्डों के ग्रामीण विकास स्तर ने शस्य वैविध्य को प्रभावित किया है। ग्रामीण विकास के प्रभाव के कारण कृषकों का रूझान अधिक मुद्रा दायिनी/नगदी फसलों के उत्पादन की ओर अधिक हुआ है जिस के प्रभाव से शस्य वैविध्य कम पाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र के पंवासा विकासखण्ड में आर्थिक, वित्तीय एवं व्यापारिक तथा परिवहन एवं संचार सम्बन्धी प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास स्तर अधिक पाया गया है। वही जनसंख्या प्रखण्ड के अन्तर्गत ग्रामीण विकास के साथ–साथ शस्य वैविध्य अधिक पाया जाता है। जिसका कोटिक्रम अन्तर –6.5 पाया गया है। जोकि स्पष्ट करता है कि इस विकासखण्ड के उक्त प्रखण्ड में शस्य वैविध्य उच्च स्तर का पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

अध्ययन क्षेत्र के समस्त प्रखण्डों में ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य के मध्य सह–सम्बन्ध

प्रखण्ड का नाम	सह–सम्बन्ध गुणांक
आर्थिक प्रखण्ड	0.84
वित्तीय एवं व्यापारिक प्रखण्ड	0.21
जनसंख्या प्रखण्ड	0.09
परिवहन एवं संचार सम्बन्धी प्रखण्ड	–0.41

अध्ययन क्षेत्र के अन्य विकासखण्डों भगतपुर टांड़ा, मुण्डापाण्डें, डींगरपुर, वनियाखेड़ा, बिलारी तथा बहजोई में ग्रामीण विकास एवं शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध में पर्याप्त विषमता है। जोकि तालिका संख्या 5 से स्पष्ट होती है। वही दूसरी ओर अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद के ग्रामीण विकास एवं शस्य वैविध्य का सह–सम्बन्ध गुणांक आर्थिक प्रखण्ड के विकास स्तर का 0.84, वितीय एवं व्यापारिक प्रखण्ड के विकास स्तर का 0.21, जनसंख्या प्रखण्ड के विकास स्तर का 0.09 तथा परिवहन एवं संचार सम्बन्धी प्रखण्ड के विकास स्तर का –0.41 पाया गया है, जिसे तालिका संख्या 2 में दर्षाया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विकास के आर्थिक, वित्तीय एवं व्यापारिक तथा जनसंख्या प्रखण्ड के विकास स्तर का प्रभाव शस्य वैविध्य पर काफी पड़ा है, इस विकासखण्ड में शस्य वैविध्य की अपेक्षा ग्रामीण विकास अधिक हुआ है। जिसका मुख्य कारण विकास सुविधाओं की अधिकाधिक उपलब्धता है। जिसके परिणामस्वरूप कृषकों ने अधिक मुद्रादायिनी फसलों का उत्पादन किया है। वहीं दूसरी ओर परिवहन एवं संचार सम्बन्धी प्रखण्ड के ग्रामीण विकास स्तर के साथ–साथ शस्य वैविध्य में भी वृद्धि पायी गयी है। इस प्रखण्ड के अन्तर्गत ग्रामीण विकास की अपेक्षा शस्य वैविध्य अधिक देखने को मिलता है।

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध को और अधिक स्पष्ट करने के लिए सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का संयुक्त रूप में ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम निर्धारित किया गया तत्पष्चात शस्य वैविध्य–प्रतिरूप के कोटिक्रम से कोटिक्रम अन्तर ज्ञात कर उनका सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया है। इस प्रकार विष्लेषण करके ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद के सम्पूर्ण प्रखण्ड़ों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य के कोटिक्रम तथा कोटिक्रम अन्तर को तालिका संख्या 3 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

तालिका संख्या 3 का अध्ययन करने पर पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद में ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध में प्रादेषिक स्तर पर पर्याप्त विषमता है। सम्पूर्ण प्रखण्डों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम एवं शस्य वैविध्य के कोटिक्रम अन्तर से स्पष्ट होता है कि मुरादाबाद विकासखण्ड क्षेत्र में जहॉ एक ओर ग्रामीण विकास का उच्च स्तर पाया गया है। वही दूसरी ओर शस्य वैविध्य भी उच्च पाया गया है। अर्थात मुरादाबाद विकासखण्ड क्षेत्र में पूर्ण अन्तर्सम्बन्ध पाया गया है। इस क्षेत्र में ग्रामीण विकास के उच्च स्तर के वाबजूद शस्य वैविध्य का स्तर भी उच्च पाया गया है। इस विकासखण्ड क्षेत्र में कृषकों को कृषिगत, सामाजिक एवं आर्थिक विकास से सम्बन्धित सभी सुविधाऐं उपलब्ध होने के कारण ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य में पूर्ण अन्तर्सम्बन्ध पाया

IJARETS

गया है। अतः मुरादाबाद विकासखण्ड में सम्पूर्ण प्रखण्डों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य का कोटिक्रम अन्तर 0/षून्य पाया गया है, जो स्पष्ट करता है कि अध्ययन क्षेत्र के मुरादाबाद विकासखण्ड में ग्रामीण विकास स्तर उच्च पाया गया है साथ ही साथ शस्य वैविध्य भी उच्च पाया गया है अर्थात इस क्षेत्र में ग्रामीण विकास एवं शस्य वैविध्य में पूर्ण अन्तर्सम्बन्ध पाया गया है जो अध्ययन क्षेत्र के इस क्षेत्र की प्रगति का सूचक है।

तालिका संख्या – 3

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का प्रादेषिक मूल्यांकन

विकासखण्ड का नाम	सम्पूर्ण प्रखण्डों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम	शस्य वैविध्य–प्रतिरूप का कोटिक्रम	कोटिक्रम का अन्तर
ठाकुरद्वारा	12	2	–10
डिलारी	4	1	–3
छजलेट	3	4	+1
असमौली	8	12	+4
सम्भल	2	9	+7
पंवासा	1	6	+5
भगतपुर टांडा	11	8	–3
मुरादाबाद	13	13	0
मुंडापाण्डे	7	3	–4
डींगरपुर	5	10	+5
वनियाखेड़ा	9	7	–2
बिलारी	10	11	+1
बहजोई	6	5	–1

अध्ययन क्षेत्र के बहजोई विकासखण्ड क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रखण्डों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम 06 और शस्य वैविध्य का कोटिक्रम 05 पाया गया है तथा इनका कोटिक्रम अन्तर ऋणात्मक –1 पाया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के इस (बहजोई) विकासखण्ड क्षेत्र में शस्य वैविध्य पर ग्रामीण विकास का कोई खास प्रभाव नही पड़ा है। इस क्षेत्र में ग्रामीण विकास तो उच्च स्तर पर हुआ लेकिन वही शस्य वैविध्य भी बढ़ा है। अर्थात कृषकों को समस्त सुविधाऐं उपलब्ध होने के वाबजूद उनमें एक फसली वर्ष में दो या दो से अधिक फसलें उत्पन्न करने की प्रवृत्ति पायी गयी हैं। यही कारण है कि इस विकासखण्ड क्षेत्र में ग्रामीण विकास का उच्च स्तर होने के वाबजूद शस्य विविधता उच्च पायी गयी है।

अध्ययन क्षेत्र के वनियाखेड़ा विकासखण्ड में शस्य वैविध्य कोटिक्रम 07 और सम्पूर्ण प्रखण्ड़ों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम 09 पाया गया है तथा इनके कोटिक्रम का अन्तर ऋणात्मक –2 पाया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के इस (वनियाखेड़ा) विकासखण्ड क्षेत्र में ग्रामीण विकास स्तर उच्च है लेकिन शस्य विविधता भी उच्च है। अर्थात इस विकासखण्ड क्षेत्र में शस्य वैविध्य बहजोई विकासखण्ड क्षेत्र की अपेक्षा उच्च स्तर की पायी गयी है। यह क्षेत्र (वनियाखेड़ा विकासखण्ड) छः फसली क्षेत्र है जिसमें मुख्य रूप से गेंहूँ, चावल, बाजरा, दालें, गन्ना व उर्द की कृषि की जाती है। साथ ही साथ चारे का उत्पादन स्थानीय आवष्यकतानुसार किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि वनियाखेड़ा विकासखण्ड क्षेत्र में शस्य वैविध्य का स्तर उच्च है।

अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद के डिलारी एवं भगतपुर टांड़ा विकासखण्ड क्षेत्रों में सम्पूर्ण प्रखण्डों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम क्रमषः 4 और 11 पाया गया है। वही शस्य वैविध्य का कोटिक्रम क्रमषः 1 और 8 पाया गया है। वही इन विकासखण्ड क्षेत्रों में कोटिक्रम का अन्तर ऋणात्मक –3 पाया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि इन विकासखण्ड क्षेत्रों में ग्रामीण विकास का शस्य वैविध्य पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा है। उक्त विकासखण्ड़ क्षेत्रों में ग्रामीण विकास तो हुआ लेकिन शस्य वैविध्य उच्च पाया गया है। अर्थात ग्रामीण विकास स्तर इन क्षेत्रों में पाये जाने वाली शस्य विविधता को प्रभावित नहीं कर पाया है। जिसके परिणामस्वरूप इन विकासखण्ड क्षेत्रों में शस्य विविधता उच्च पायी गयी है। ये (डिलारी एवं भगतपुर टंड़ा) विकासखण्ड दो फसली क्षेत्र पाये गये है जिसमें मुख्यतः गेंहॅ एवं चावल (धान) की फसलें उत्पन्न की जाती हैं साथ ही साथ अन्य फसलों गन्ना, चारा, सब्जियॉ, दालें, उर्द व तिलहनों आदि की कृषि की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद के मुड़ापाण्डें विकासखण्ड क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रखण्डों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम 07 पाया गया है और शस्य वैविध्य का कोटिक्रम 03 पाया गया है तथा इन कोटिक्रम का कोटिक्रम अन्तर –4 पाया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के इस क्षेत्र (मुड़ापाण्डे विकासखण्ड) में शस्य वैविध्य उच्च पाया गया है। यह क्षेत्र दो फसली क्षेत्र है जिसमें मुख्य रूप से गेंहूँ एवं चावल की कृषि की जाती है। साथ ही साथ चारा, सब्जियॉ, गन्ना, दालें, उर्द आदि फसलों का उत्पादन्न किया जाता है। इस

IJARETS

विकासखण्ड क्षेत्र में एक ओर ग्रामीण विकास का स्तर उच्च है, वही शस्य वैविध्य भी उच्च पाया जाता है। कृषकों को अनेक सुविधाऐं उपलब्ध होने के वाबजूद उनके द्वारा एक फसली वर्ष में अनेक फसलों का उत्पादन्न किया जाता है।
अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद के ठाकुरद्वारा विकासखण्ड क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रखण्ड़ों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम 12 पाया गया है। वही शस्य वैविध्य का कोटिक्रम 02 पाया गया है, तथा इस विकासखण्ड में कोटिक्रम का अन्तर –10 पाया गया है जोकि सर्वाधिक अन्तर्सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। अर्थात इस विकासखण्ड क्षेत्र में ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य विविधता में अति उच्च अन्तर्सम्बन्ध पाया जाता है। जिससे स्पष्ट होता है कि इस विकासखण्ड क्षेत्र में सर्वाधिक शस्य वैविध्य पाया गया है। अध्ययन क्षेत्र के समस्त विकासखण्ड़ों की अपेक्षा इस विकासखण्ड क्षेत्र में ग्रामीण विकास स्तर तो निम्न पाया गया है, लेकिन शस्य विविधता सर्वाधिक पायी गयी है। अध्ययन क्षेत्र में प्रादेषिक स्तर पर सर्वाधिक शस्य वैविध्य इस क्षेत्र (ठाकुरद्वारा विकासखण्ड) में ही पाया गया है। यह क्षेत्र मुख्यतः तीन फसली क्षेत्र है जिसमें मुख्य रूप से गेंहूँ, चावल व गन्ना फसलों के अन्तर क्षेत्र पाया जाता है। वही अन्य फसलों चारा, सब्जियॉ, दालें, उर्द आदि के अन्तर्गत कुछ क्षेत्र पाया जाता है। यह विकासखण्ड क्षेत्र सम्पूर्ण प्रखण्डों की दृष्टि से अति उच्च शस्य वैविध्य वाला क्षेत्र है।

सम्भल विकासखण्ड अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद का सर्वाधिक विकसित ग्रामीण क्षेत्र है। इस क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रखण्ड़ों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम 02 पाया गया है वही शस्य वैविध्य का कोटिक्रम 09 पाया गया है तथा कोटिक्रमों का कोटिक्रम अन्तर +07 पाया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में शस्य वैविध्य पर ग्रामीण विकास का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। ग्रामीण विकास का स्तर उच्च होने के कारण कृषकों द्वारा अधिक मुद्रादायिनी फसलों का उत्पादन अधिक करने के कारण शस्य वैविध्य बहुत कम देखने को मिलता है। अर्थात शस्य वैविध्य कम है और ग्रामीण विकास उच्च है। इस विकासखण्ड क्षेत्र के कृषक फसलों का उत्पादन व्यवसायिक दृष्टि से अधिक करते है उन्हे जिन फसलों से अधिक आय प्राप्त होती है वे उन्ही फसलों का उत्पादन अधिक करते है। इस क्षेत्र का कुल फसली क्षेत्र के सर्वाधिक क्षेत्र पर गेंहूँ, चावल, गन्ना, बाजरा, चारा, आलू आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है।
पंवासा एवं डींगरपुर विकासखण्ड क्षेत्रों में सम्पूर्ण प्रखण्ड़ों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम क्रमषः 01 एवं 05 पाया गया है तथा शस्य वैविध्य का कोटिक्रम क्रमषः 06 एवं 10 पाया गया है, तथा कोटिक्रम का अन्तर +5 पाया गया है, जोकि धनात्मक है जिससे स्पष्ट होता है कि इन विकासखण्ड क्षेत्रों में ग्रामीण विकास का स्तर उच्च है और शस्य वैविध्य कम पाया जाता है। अतः शस्य वैविध्य पर ग्रामीण विकास का प्रभाव पड़ा है। अर्थात इन क्षेत्रों में अन्तर्सम्बन्ध अधिक है। लेकिन धनात्मक अन्तर्सम्बन्ध है। इन क्षेत्रों के ग्रामीण विकास के सम्पूर्ण प्रखण्डों के विकास स्तर ने शस्य विविधता को प्रभावित किया है। अर्थात विकास के कारण शस्य विविधता प्रभावित हुई है। ये क्षेत्र (पंवासा एवं डींगरपुर विकासखण्ड) छः फसली क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में कृषकों को कृषि हेतु पर्याप्त सुविधाऐं उपलब्ध होने के कारण कृषकों द्वारा अधिक मुद्रादायिनी फसलों का उत्पादन अधिक किये जाने के कारण इन क्षेत्रों में शस्य वैविध्य कम पाया गया है।
अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद के असमौली विकासखण्ड क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रखण्ड़ों का संयुक्त ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम 08 पाया गया है, वही शस्य वैविध्य का कोटिक्रम 12 पाया गया है तथा कोटिक्रम का अन्तर धनात्मक +4 पाया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में ग्रामीण विकास का स्तर उच्च है तथा शस्य वैविध्य कम है। यह क्षेत्र चार फसली क्षेत्र है। इस क्षेत्र में अधिक मुद्रादायिनी फसलों का उत्पादन किया जाना शस्य वैविध्य को प्रभावित करता है, और ग्रामीण विकास स्तर को उच्च बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद के छजलेट एवं बिलारी विकासखण्ड क्षेत्रों में सम्पूर्ण प्रखण्डों का संयुक्त प्रखण्डों के अन्तर्गत ग्रामीण विकास स्तर का कोटिक्रम क्रमषः 03 एवं 10 पाया गया है और शस्य वैध्यि का कोटिक्रम क्रमषः 04 एवं 11 पाया गया है तथा कोटिक्रम अन्तर धनात्मक +1 पाया गया है। जिससे स्पष्ट होता है। कि इन विकासखण्डों में ग्रामीण विकास का स्तर अधिक है। वही ग्रामीण विकास उच्च होने का कारण शस्य वैविध्य कम हो गयी है। अर्थात ग्रामीण विकास होने से सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, परिवहन आदि सुविधओं के विकसित होने से कृषकों में अधिक मुद्रा दायिनी/नगदी प्रदान करने वाली फसलों के उत्पन करने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। जिसका प्रभाव शस्य वैविध्य पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में पड़ा है। इन विकासखण्ड क्षेत्रों में कृषकों एवं ग्रामीण वासियों के जीवन स्तर में सुधार एवं विकास हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद में ग्रामीण विकास एवं शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का प्रदेषिक मूल्यांकन को और अधिक स्पष्ट करने के लिए अध्ययनकर्त्ता ने सम्पूर्ण क्षेत्र के ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य वैविध्य के मध्य अन्तर्सम्बन्ध का मूल्यांकन करने हेतु स्पीयरमैन महोदय द्वारा प्रतिपादित **अनुस्थिति अन्तर विधि** (Rank Difference Method) का प्रयोग सह–सम्बन्ध गुणांक ज्ञात करने के लिए किया है। जिसके आधार पर अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास स्तर एवं शस्य विविधता सह–सम्बन्ध गुणांक 0.30 निम्न धनात्मक प्राप्त हुआ है। जोकि यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन क्षेत्र मुरादाबाद जनपद में ग्रामीण विकास एवं शस्य विविधता में निम्न धनात्मक अन्तर्सम्बन्ध (सह–सम्बन्ध) है। अर्थात स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में शस्य वैविध्य पर ग्रामीण विकास के विभिन्न चरों के साथ ही अन्य भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का भी प्रभाव महत्वपूर्ण रूप से पड़ता है।

IJARETS

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. सिंह, जगदीष एवं सिंह, बी0 आर0(1981): कृषिगत गहनता एवं विविधता तथा ग्रामीण विकास, उ0भा0भू0 पत्रिका, अंक 17 सं0 1।
2. सिंह, जे0 तथा सिंह, बी0 (1981); कृषिगत घनत्व एवं विविधता तथा ग्रामीण विकास; उ0 भा0 भू0 प0, अंक–17, सं–1।
3- सिंह, जे0 (1974) विकासषील देषों के पारिस्थितिक एवं भू–वैन्यासिक संगठनों में यामायात की भूमिका; उ0 भा0 भू0 प0, अंक–10, सं–2।
4- गोयल, एस0के0 एवं सिंह, ए0के0 ''मुरादाबाद जनपद में ग्रामीण विकास का स्तर'' भारतीय सामाजिक विज्ञान षोध पत्रिका, सरयूपार सामाजिक विज्ञान अनुसंधांन परिषद, बस्ती , भारत, अंक 9, सं0 1।
5. मेमोरिया, सी0 बी0 (1975) ''भारत का भूगोल– कृषि भूगोल; षिवलाल कं0 आगरा।
6. तिवारी, आर0 सी0 और सिंह, बी0एन0 (1998): कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. जे0 सिंह (1982); ''भौगोलिक चिन्तन के मूलाधार'', बसुन्धरा प्रकाषन, गोरखपुर।
8- Rondinelli, D.A. and Ruoldle,K. (1976); Urban faction in Rural Development- An Analysis of integrated spatial Development policy U.S.A.I.D., New York.
9- Zaman, M.A. (1978); Soe aspects of integrated rural development –Report on the FAO/SIDA/DSE inter regional symposiumon Integrated rural development, part-I, FAO, Rome.
10. Seventh five year plan Draft; 1985-90, Vol.-III; Planning Commission, Govt. of India, New Delhi.
11. Singh, R.B.(1985); Concepts of Integration in Rural Development; D.N.Singh at (Ed.); Rural Development in India.
12. जिला अर्थ एवं सांख्यिकी पत्रिका, मुरादाबाद जनपद।
13. योजना, मासिक पत्रिका।
14. गजटीयर, उत्तर प्रदेष।
15. गजटीयर मुरादाबाद जनपद।
16. कुरूक्षेत्र, मासिक पत्रिका।
17. भारत 2004 वार्षिकी पत्रिका।

IJARETS